**ओ३म्**

**“सत्य का मार्ग ही जीवन की सफलता का मार्ग है”**

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है? इसके उत्तर में कह सकते हैं कि सत्य को जानना, समझना, उस पर गहनता से विचार करना, ऋषि दयानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों के जीवन चरितों व उपदेशों का अध्ययन करना, ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का सत्य ज्ञान कराने वाले वेद एवं सत्यार्थाप्रकाशादि ग्रन्थों को प्राप्त करना व उनका अध्ययन करना, यह सब करके संसार व जीवन विषयक सत्य का निर्धारण करना और उसका पालन करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्रतीत होता है। एक वैदिक प्रार्थना बहुत प्रचलित है **’असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतम् गमय’।** इसमें कहा गया है कि **‘हे सृष्टि बनाने, चलाने व इसकी प्रलय करने वाले परमात्मन् ! आप सत्य व असत्य को जानते हैं। आप हमें असत्य से हटा कर सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा करें। मैं असत्य का आचरण न करूं और जीवन में सदैव सत्य का ही आचरण करूं, सदा सत्य व प्रकाश के मार्ग पर ही चलूं और जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाऊं।’** इस वैदिक प्रार्थना में जो कुछ कहा गया है, उससे कोई भी मनुष्य असहमत नहीं हो सकता। एक अन्य प्रार्थना जो देश का ध्येय वाक्य भी कह सकते हैं, वह है **‘सत्यमेव जयते’।** इसका अर्थ है कि सत्य की ही सदा विजय होती है। सत्य कभी पराजित नहीं होता। अतः जिसकी सदा विजय हो और जो कभी पराजय को प्राप्त न हो, उसी को हमें मानना चाहिये व आचरण में लाना चाहिये।

 जब हम अपने प्राचीन ऋषि-मुनि व विद्वानों के जीवनों पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि उनका जीवन सत्य को जानने व उसके आचरण को ही समर्पित था। वह पर्वतों की कन्दराओं, घने वनों में स्थित आश्रमों व कुटियायें बना कर वहां तप की साधना करते थे। तप का अर्थ ही सत्य को जानना व उसका आचरण करना होता है। सत्य अर्थात् ईश्वर के सत्य गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर उनका उसके अनुरूप स्तुति व स्तवन करना ही ईश्वर की पूजा कहलाता है। विश्व विख्यात ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है कि स्तुति का अर्थ स्तोत्य वस्तु के सत्य गुणों को जानकर उसका वर्णन करना होता है। ईश्वर की स्तुति की बात करें तो इसके गुणों सत्य, चित्त, आनन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निरभिमानी, पवित्र, धार्मिक, पक्षपात रहित होकर न्याय करने वाला, अनादि, नित्य, अमर, अविनाशी, अजन्मा, सृष्टि को बनाने, चलाने, पालन करने व प्रलय करने वाला, सब जीवों को उनके कर्मों का फल देने वाला, जीवात्माओं को जन्म-मृत्यु और पुनर्जन्म देने वाला, अजर, अभय आदि गुणों का उच्चारण व प्रशंसा कर अपने गुणों को भी इसके अनुसार बनाना होता है। ईश्वर व अपने से बड़ों की स्तुति करने से अहंकार का नाश होता है। अहंकार का नाश परमावश्यक भी है। अहंकारी मनुष्य का नाश हो जाता है। रावण व दुर्योधन के उदाहरण हमारे सामने हैं। ईश्वर व किसी महापुरुष सत्य व यथार्थ स्तुति हमें नाश से बचाती है। किसी के प्रति नत-मस्तक होने से अहंकार दूर हो जाता है। उसके प्रति श्रद्धा व आदर की भावना उत्पन्न होती है। ईश्वर सबसे महान व सर्वोत्तम सत्ता है जिससे संसार के सभी मनुष्य व प्राणी लाभान्वित हैं। अतः सबको ईश्वर व परोपकारी, स्वार्थशून्य, चरित्रवान महात्माओं की स्तुति करनी चाहिये। महापुरुषों के जीवन में अधिकांश ईश्वर के समान व उसके जैसे न्यूनाधिक गुण होते हैं जिससे संसार के सभी लोग, कोई किसी भी मत का अनुयायी क्यों न हो, उन महापुरुषों का मत-पन्थ की संकीर्ण मान्यताओं से ऊपर उठकर उनका सम्मान करते हैं। यही कारण है कि लाखों व हजारों वर्ष बीत जाने पर भी श्री राम, श्री कृष्ण, चाणक्य, युधिष्ठिर सहित अर्वाचीन लोगों में महर्षि दयानन्द, योगी अरविन्द, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि को आज भी लोग सम्मान देते हैं और उन्हें याद करते हैं। देश के लिए शहीद सेना के जवानों के प्रति भी लोगों का हृदय भावुक होकर अश्रुधारा बहाने लगता है। इसका उदाहरण है कि आज से 65 वर्ष पहले गाया गया गीत **‘ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी’** आज भी लोकप्रिय है। इसे सुन कर सभी देश भक्तों की आंखे नम हो जाती है। इस गीत में सत्य की शक्ति ही, देश के लिए बलिदान की भावना जिसका पर्याय है, छुपी हुई है जो हमें आकर्षित करती है व अपनी ओर खींचती है।

 सत्य की सबसे अधिक प्रतिष्ठा विज्ञान के क्षेत्र में हैं। वहां युवक विज्ञान पढ़ कर व पूर्व के प्रौढ़ वैज्ञानिक सृष्टि विषयक सत्य रहस्यों की खोज में लग जाते हैं। पढ़े हुए का चिन्तन मनन करते हैं। नई खोज की योजना बनाते हैं। नये नये प्रयोग करते हैं और उसके परिणामों का अध्ययन व विश्लेषण करते हैं। यह क्रम चलता रहता है। एक समय आता है कि जब उनका लक्ष्य सिद्ध हो जाता है। इसी प्रक्रिया को अपना कर विज्ञान आज यहां तक पहुंचा है कि जब उसे विज्ञान के द्वारा तृण वा तिनके से लेकर ब्रह्माण्ड तक का अधिकांश ज्ञान तो प्राप्त हुआ ही है, उसने ऐसे ऐसे आविष्कार भी किये हैं कि जिनसे आज हमारा जीवन अत्यन्त सुविधापूर्ण व आसान बन गया है। ऐसा सुविधापूर्ण जीवन सृष्टि के आदि काल के बाद कभी रहा हो इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता। आज कम्प्यूटर व स्मार्ट फोन का युग है। संसार हमारी मुट्ठी में आ गया है। कोई भी जानकारी प्राप्त करनी होती है तो वह हमें गुग्गल की सहायता से कुछ ही क्षणों में ही सुलभ हो जाती है। इतिहास में ऐसे उन्नत युग की कहीं चर्चा नहीं है। विज्ञान आखिर है क्या? इस पर विचार करें तो इसका उत्तर यही मिलता है कि संसार के सत्य रहस्यों को जानना व उसका ज्ञान प्राप्त करना ही विज्ञान है। इस जाने हुए विज्ञान का उपयोग कर अपनी सुविधाओं की वस्तुओं का निर्माण करना ही आविष्कार है व आविष्कार से निर्मित उत्पाद विज्ञान की देन कहलाते हैं जैसे कम्प्यूटर, हवाई जहाज, रेलगाड़ी आदि। धर्म भी ईश्वर, आत्मा, मनुष्य जीवन के विभिन्न पक्षों से संबंधित सत्य रहस्यों की खोज व उसके आचरण का ही नाम है जिसे साम्प्रदायिक मतों ने व राजनीति दलों ने अपनी वोट बैंक की नीति के कारण अप्रासंगिक बना दिया है।

 हम इस संसार को देखते हैं तो इसकी विशालता को जानकर हमारा सिर घूम जाता है। संसार में ऐसे भी सूर्य पिण्ड बतायें जाते हैं जिसका प्रकाश अभी तक हमारी धरती पर नहीं पहुंचा है। प्रकाश की गति प्रति सेकेण्ड 1,86,000 मील है। इससे ब्रह्माण्ड की विशालता का ज्ञान होता है। हम जानते हैं कि कोई भी रचना बिना कर्ता के नहीं होती। अतः इतना विशाल सुव्यवस्थित ब्रह्माण्ड भी बिना एक कर्ता **‘ईश्वर’** के बन व चल नहीं सकता। हमें संसार को बनाने वाले उसी ईश्वर की खोज करनी है। उसे अपनी आत्मा में प्राप्त करना है। सच्चे विद्वानों व ज्ञानियों की शरण लेकर उनसे ईश्वर के स्वरूप व गुणों को जानना है। हमें अपनी आत्मा के स्वरूप व उसके अतीत व भविष्य पर भी विचार करने के साथ ज्ञानियों व पुस्तकों से उसका ज्ञान प्राप्त करना है और उसके उत्कर्ष व उन्नति के लिए पुरुषार्थ करना है। यह तभी हो सकता है कि जब हम सत्य की प्रतिष्ठा करेंगे और बुद्धि की जड़ता और अन्धविश्वासों से ऊपर ऊठेंगे। यदि परम्परागत मान्यताओं में बने रहेंगे तो शायद हम सत्य को जान न सकें। हमें धर्म विज्ञानी व सत्य-धर्म शोधार्थी बनना होगा। इससे हमें अनेक नये रहस्यों का ज्ञान होगा जिससे हम देश व संसार का कल्याण कर सकते हैं। प्राचीन ग्रन्थ वेद, उपनिषद, दर्शन आदि को भी गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिये। इन्हीं ग्रन्थों के क्रम में ही सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि ग्रन्थ भी हैं। इनमें प्राचीन सत्य ज्ञान भरा है। ऐसा ऋषि मुनि व शास्त्रों के ज्ञाताओं का कथन है। सत्य में ही जीवन को लगाना और नये नये बहुमूल्य मोतियों को प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। आईये! जीवन के लक्ष्य **‘‘सत्य”** पर विचार करें और उस को प्राप्त करने के लिए आज ही सत्य के मार्ग पर चलना आरम्भ कर दें।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001 / Mob. 09412985121**